

### Acknowledgement:

The author is grateful for the support of Prof. Dr. Blessy Antony Principal St. Francis College of Nursing, Indore, teaching faculty of SFCO and all participants for their cooperation. Author also extends special thanks to students of SFCO Ms. Angel Rose Simon, Sr. Shayana, Ms. Annu Tom, Ms. Pragati Bhabor and Mr. Karan Chouhan for their special contribution.

\*\*\*\*\*

### Reference-

1. **Srinivas Kesineni et.al (2023)**, "Anaemia Mukh Bharat Abhiyan" Government of India Ministry of Health And Family Welfare Department of Health and FamilyWelfareFebruary2023Availablefrom,<https://pqals.nic.in/annex/1711/AS122.pdf>
2. **Tulchinsky H. Theodore et.al (2020)**, "Millineum Development Goals - 2025" The New Public Health (Third Edition), 2020, chapter - 16,Pg.no. 821-866. Available from, <https://www.sciencedirect.com/topics/psychology/millennium-development-goals>
3. **Soyra Gune et.al (2023)**, "Tracking anaemia and its determinants from 2015-16 to 2019-21 in India" programme or technical, UNICEF Publishers, April 2023 Available from,<https://knowledge.unicef.org/resource/tracking-anaemia-and-its-determinants-2015-16-2019-21-india>
4. **Swapna Mary A,(2022)**, "A Study to Assess the Effectiveness of Beetroot Juice with Jaggery on Haemoglobin Level among the Adolescent Girls in Selected Nursing College at Bangalore, Karnataka", Global College Of Nursing, Bangalore, India,4(1)Availablefrom,<https://matjournals.co.in/index.php/JMSNPR/article/view/20>
5. **Rosas Pena Pablo Juan (2011)**, "Assessing the iron status of population, report of WHO", 2<sup>nd</sup>edition,Geneva,2011.availableat,[https://www.who.int/nutrition/publications/micronutrients/anaemia\\_iron\\_deficiency/9789241596107.pdf](https://www.who.int/nutrition/publications/micronutrients/anaemia_iron_deficiency/9789241596107.pdf)

### किन्नरों की सामाजिक परंपराएँ एवं आधुनिक जीवन

नितिल तिवारी

शोधार्थी, हिन्दी विभाग  
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह  
महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. समय लाल प्रजापति

सह प्राध्यापक  
हिन्दी विभाग,शासकीय ठाकुर रणमत  
सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

भारतीय समाजिक परम्परा में किन्नरों का प्रथम साक्ष्य पुराणों से ही मिलता है सर्वप्रथम साक्ष्य के रूप में हम शिव के अर्धनारीश्वर रूप को देख सकते हैं। शिव व शक्ति का सम्मिलित रूप अर्धनारीश्वर है। यहाँ शिव पुरुष तथा शक्ति स्त्री के साथ ही साथ शिव पुरुष तथा शक्ति प्रकृति अथवा मन का प्रतिनिधित्व करते हैं। दोनों के ही सहयोग से सृष्टि का निर्माण एवं प्रारंभ होने की कथाएँ प्रचलित हैं। किन्नर समुदाय भी स्वयं को अर्धनारीश्वर के सृष्टि निर्माता के रूप में रखता है।

इसके अतिरिक्त भगवान शिव के पुरुष और स्त्री दोनों के संयुक्त रूप को लेकर अनेक कथाएँ प्रचलित हैं जिनके अनुसार शिव ब्रह्मा द्वारा सृष्टि के निर्माण में सहायता माँगने पर अपने आधे शरीर को नारी का शरीर बनाया तथा उससे संतान उत्पन्न कर सृष्टि के क्रम को आगे बढ़ाने में अपने योगदान दिया। दूसरी अन्य कथा के अनुसार जब शिव द्वारा गंगा को अपनी जटाओं में धारण किया गया तब पार्वती के नाराज होने पर शिव ने उन्हें अपने वाम अंग में धारण किया। "जब शिव की संगिनी पार्वती ने गंगा मैया को शिव के शीश पर देखा तो वे आग-बबला हो उठी ..... पार्वती को शांत करने के लिए शिव ने उन्हें अपने अलिंगन में ले लिया और तब तक नहीं छोड़ा जब तक कि वे उनमें विलीन होकर उनके शरीर का आधा हिस्सा नहीं बन गई।"<sup>1</sup>

"अनंत पुराणों में छिपा है सनातन सत्य,

इसे पूर्णतः किसने देखा है।

वरुण के है नयन हजार

इंद्र के सौ

आपके मेरे केवल दो"

पुराण विश्व का प्राचीनतम ज्ञानकोश है, जिनमें मनुष्य की उत्पत्ति से लगाकर वर्तमान तथा भविष्य तक के सत्य छुपे हुए हैं, परन्तु इसे पूर्णतया कोई ना तो देख पाया है ना समझ पाया। पुराणों के ज्ञान को अपने हजार नेत्रों के बावजूद वरुण तथा सौ नेत्रों के बावजूद इंद्र भी पूर्णतया न समझ पाये तो व्यक्ति अर्थात् सामान्य मनुष्य के पास तो केवल दो नेत्र हैं, इसलिए पुराणों में निहित ज्ञान को पूरी तरह से समझ पाना मानव के लिए संभव नहीं है। फिर भी मनुष्य हमेशा से प्रयत्नशील रहा है कि वह अपने उपयोगी ज्ञान को खोज निकाले। पौराणिक साहित्य तत्कालीन समाज में घटित होने वाली सच्ची घटनाओं पर आधारित कहानियाँ हैं जो व्यक्तियों के विश्वासों पर गहरा प्रभाव छोड़ती है।

इसी हिन्दू पौराणिक साहित्यों में भी लगातार किन्नरों के संदर्भ मिलते रहते हैं। इन कथाओं में ऐसे संदर्भ हैं, " जो पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व की धारणा व विचारों पर प्रश्न चिह्न खड़ा करते हैं तथा ऐसे प्राणियों की जानकारी देते हैं जिनमें न तो पूर्णतः स्त्री तत्व है न ही पूर्ण पुरुष तत्व है। इनके अतिरिक्त ऐसे प्राणियों जिनमें दोनों का अंश बराबर मात्रा में होने की जानकारी मिलती है, इनके अतिरिक्त पुराणों में विभिन्न स्थानों पर अनेक ऐसी कहानियाँ देखने को मिलती हैं जिनमें महिलाएँ पुरुष बन गई तथा पुरुष महिलाओं के रूप में रूपांतरित हो गए।"<sup>2</sup>

भागवत पुराण के नारद प्रसंग, उर्वशी प्रसंग, स्कंद पुराण के सामवान प्रसंग, रत्नावली प्रसंग, विष्णु पुराण के भस्मासुर वध प्रसंग तथा समुद्र मंथन के समय का मोहिनी प्रसंग आदि ऐसे ही अंतर्कथाएँ हैं, जिनमें किन्नरों की भावना को बल मिला है। भागवत पुराण की रचना पाँचवीं से दसवीं सदी ईसवी के मध्य मानी जाती है। इसी में वर्णित नारद प्रसंग में नारद द्वारा पहले स्त्री बन कर विवाह करने तथा अपने पति की मृत्यु हो जाने पर श्रीकृष्ण द्वारा उन्हें पुनः पुरुष बनाने की कथा वर्णित है उर्वशी प्रसंग में उर्वशी जो स्वर्ग की अप्सरा है, उनके जन्म की कथा वर्णित है कि उर्वशी का जन्म किसी स्त्री के उदर से न होकर भगवान विष्णु की उरू अर्थात् जंघा से हुआ है इसलिए इनका नाम उर्वशी हुआ। इन्होंने अपने जन्म के उद्देश्य असुरों तथा ऋषियों की तपस्या को भंग कर इंद्रलोक को बचाने में इंद्रदेव की सहायता की।

स्कंद पुराण में भी स्त्री से पुरुष तथा पुरुष से स्त्री बनने की अनेक अंतर कथाएँ मौजूद हैं। जिनमें सामवान के यौन परिवर्तन की कथा प्रमुख है। "इस कथा के अनुसार सामवान तथा उसके मित्र सुमेध द्वारा छल से रानी सीमांतिनी से गहने तथा उपहार लेने के लिए छल किया जाता है जिसमें सामवान स्त्री रूप धरकर सुमेध की पत्नी बन रानी के पास जाता है। रानी द्वारा सच का पता चलने पर सामवान अपना पुरुषत्व खो स्त्री रूप में बदल जाता है एवं उसे आजीवन सुमेध की पत्नी बनकर जीवन यापन करना पड़ता है। स्कंद पुराण का रचनाकाल आठवीं से बारहवीं शताब्दी माना गया है।" 3

विष्णु पुराण में भगवान विष्णु द्वारा दो बार स्त्री का रूप धारण करने की कथा कही गई है। पहली बार वे समुद्र मंथन के समय देवता और दानवों में अमृत का विभाजन करते समय मोहिनी रूप धारण करते हैं तथा छल से अमृत देवताओं को पिलाते हैं एवं दानवों को उस से वंचित रखते हैं। दूसरी बार वह शिव के आग्रह पर मोहिनी रूप धरकर भस्मासुर नामक राक्षस का वध करते हैं।

इस प्रकार वर्तमान किन्नरों की किन्नरता के साक्ष्य हमें पौराणिक साहित्य से मिलते हैं। यह किन्नरता सिर्फ शारीरिक ही नहीं मानसिक भी है। हमें अनेक देवताओं, मनुष्यों की समलैंगिकता के रूप में भी किन्नरों के अस्तित्व के दर्शन होते हैं। एक उन्मादी व्यक्ति, पूर्व में एक हरम परिचर या एक प्राच्य महल अधिकारी के रूप में कार्यरत थे अर्थात् वह व्यक्ति जो राजा महाराजाओं के हरम की रखवाली करते हैं साथ ही महलों में सुरक्षा कर्मचारी के रूप में कार्यरत रहते थे।

“Oxford Advanced Dictionary में भी क्रमशः 4 शब्द बताएँ गए हैं जो किन्नर समुदाय के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं। पहला शब्द क्लीव है, जिसका अर्थ कायर या स्वभाव से भीरु पुरुष के लिए लाया जाता है। जो शारीरिक संबंध स्थापित करने में असक्षम हो तथा सीमित मात्रा में हो। "नपुंसक, कायर, सीमित" 4

किन्नर समुदाय के लोगों के भीख मांगने वाले लोगों को स्वचलित रूप से किन्नर पदानुक्रम के भीतर सबसे निचले स्तर का माना जाता है। उच्च रैंक वाले लोगों के पास निचले रैंक वाले लोगों को भीख मांगने का काम सौंपने की शक्ति होती है और वे इस गतिविधि में भाग नहीं लेने का विकल्प चुन सकते हैं। थोड़ी ऊंची रैंक वाले भी अपनी आय बढ़ाने के लिए यौनकर्म के रूप में काम कर सकते हैं।

हालाँकि, निचले स्तर के लोगों को सेक्स वर्क में रहना चुनौतीपूर्ण लगता है क्योंकि अक्सर उनके पास अपने रूप को बनाए रखने के लिए वित्तीय संसाधन नहीं होते हैं। कई निम्न श्रेणी के किन्नरों के लिए, मेकअप, बढ़िया कपड़े और शारीरिक परिवर्तन की निशेधात्मक लागत के कारण, उनके लिए अपनी इच्छानुसार लिंग प्रदर्शन करना मुश्किल

होता है। उदाहरण के लिए, परिभ्रमण क्षेत्रों में (अक्सर निचली श्रेणी के किन्नरों द्वारा पहुंच वाले) यौन संबंध बनाने की इच्छा रखने वाले लोग केवल थोड़ा पैसा कमाते हैं क्योंकि वे अपना चेहरा मुंडवा लेते हैं, जिससे उनकी ठुड्डी और जबड़े की रेखा "अनाकर्षक" रह जाती है। वे किन्नर जो बेहतर पैसा कमाते हैं वे अपने चेहरे और शरीर से लेजर बाल हटाने, मैमोप्लास्टी और बेहतर हार्मोनल इंजेक्शन से गुजरते हैं जो उनकी स्त्रीत्व को बढ़ाते हैं- एक ऐसा पहलू जिसे बेहतर भुगतान करने वाले यौन ग्राहकों द्वारा पुरस्कृत किया जाता है, इसके अलावा, निचले दर्जे के किन्नरों को अन्य "स्त्री" पुरुषों और महिला यौनकर्मियों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण कुछ खुले परिभ्रमण क्षेत्रों में ग्राहकों को आकर्षित करने में भी कठिनाई होती है। कल्याणी, एक किन्नर, जिसे बधिया नहीं किया गया है, लेकिन उसके स्तन प्रत्यारोपण हुए हैं, ने कहा:-

"हम किन्नर आज अपने स्वास्थ्य और हमारे शरीर के सबसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण हिस्से को हटाने के ऐसे क्रूर ऑपरेशन (बधियाकरण समारोह) के परिणामों से अच्छी तरह परिचित हैं। मैं अभी भी एक किन्नर हूँ और मैं जीवन भर अपने शरीर को स्थायी रूप से नुकसान नहीं पहुंचाना चाहती।" 5

**निष्कर्ष:-**

हिजड़े अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए समाज के स्वैच्छिक समर्थन पर निर्भर होते हैं। हिजड़े के अच्छे भविष्य के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि उनकी परम्परागत मनः स्थिति जो युग-युगो से चली आ रही है, उसमें परिवर्तन लाया जाय।

हिजड़ा समुदाय के प्रायः सभी सदस्य अपनी आजीविका के लिए दूसरो पर निर्भर रहते हैं। इस समुदाय के सदस्यों को आत्मनिर्भर बनाने के यथावत प्रयास करना चाहिए। युगों-युगों से वे जो परम्परिक कार्य करते चले आ रहे हैं, उसमें परिवर्तन लाया जाना चाहिए।

हिजड़ा समुदाय आज के बदलते परिवेश में युग एवं काल की आवश्यकतानुसार यदि समाज के कल्याणार्थ उपयोगी सिद्ध नहीं होगा तो आने वाले दिनों में यह समुदाय और अधिक उपेक्षित एवं तिरस्कृत हो सकता है। यदि हिजड़ा समुदाय के सदस्य अप्रकार्यात्मक कृत्यों के स्थान पर युगानुकूल प्रकार्यात्मक कृत्यों को करने की ओर अभिमुख हो तो निःसंदेह उनका भविष्य उज्ज्वल हो सकता है।

\*\*\*\*\*

**संदर्भ-**

1. पटनायक देवदत्त: शिखंडी और कुछ किन्नर कहानियाँ पृष्ठ संख्या - 174
2. पटनायक देवदत्त: शिखंडी और कुछ किन्नर कहानियाँ पृष्ठ संख्या- 42
3. <https://books.google.co.in>
4. आक्सफोर्ड एडवांस डिक्शनरी: पृष्ठ संख्या- 244
5. वही पृष्ठ संख्या - 396